ऋग्वेद यजुर्वेद

वर्ष-१२ अंक-२
२७ सितम्बर २०१५

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17
एक प्रति- २०-०० रू.

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

सामवेद अथर्ववेद

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१२ अंक-२

२७ सितम्बर २०१५
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६
विक्रम संवत् २०७२
दयानन्दाब्द १९०

सलाहकार मण्डल
- राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र. विषय	पृष्ठ
संपादकीय	4
मुझ सा बुरा न कोय	8
महर्षि द्वारा रचित ग्रंथों का परिचय	10
पेट के रोगों में गुणकारी : नींबू	12
मृतक श्राद्ध तर्पण एक चिंतन	15
महर्षि दयानंद और आर्य समाज...	21
आर्य समाज की स्थापना	25
जिला प्रभारियों की नियुक्ति	26

अक्टूबर माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

2	गांधी जयंती
5	रानी दुर्गावती जयंती,
7	गुरुनानक देवपुण्य तिथि
8	वायुसेना दिवस
10	विश्व डाक दिवस
11	जय प्रकाश नारायण जयंती
16	विश्व खाद्य दिवस
22	विजयदशमी पर्व, स्वामी रामतीर्थ जयंती
24	संयुक्त राष्ट्र संघ स्थापना दिवस
26	शरदपूर्णिमा, बाल्मीकि जयंती, गणेश शंकरविद्यार्थी जयंती
29	गुरु रामदास जयंती
31	इंदिरा गांधी पुण्य तिथि सरदार पटेल जयंती

सम्पादकीय –जीवन की दोहरी नीति

लम्बा जीवन जीने के साथ-साथ अच्छा जीवन जीना महत्वपूर्ण है।

आज का समाज विरोधाभासी जीवन पद्धति को अपना रहा है। वह अच्छा दिखना चाहता है, दिखाना चाहता है परन्तु अच्छा बनना नहीं। हर प्राणी जीवन चाहता है, वह मृत्यु से दूर रहना चाहता है। प्रत्येक मनुष्य कल्पनाओं में इस जीवन को लम्बे समय तक जीने में सुख की अनुभूति करता है। इस लम्बे जीवन के पीछे सांसारिक मोह माया और उसे प्राप्त हुए या उसके द्वारा एकत्रित किये गये साधनों का अधिक से अधिक उपयोग कर उनसे सुखों के भोग की इच्छा रहती है।

अपने प्रयासों से एकत्रित किये गये सुखदायक साधन, सामग्री, धन, सम्पत्ति और मोहवश प्रद, परिवार वह छोड़ना नहीं चाहता। सांसारिक भोगों में लिप्त व्यक्ति अपने अन्तिम स्वांस तक भी मोह माया में बंधा रहता है, उसकी इच्छाएं कमजोर नहीं होती, वह भले ही कमजोर हो जावें। राजा भृर्तहरि ने वैराग्य शतक में इसका उल्लेख करते हुए लिखा है – **"तृष्णा न जीर्णा, वयमेव जीर्णा"** हम जीर्ण–क्षीण हो जावें पर यह इच्छा कभी जीर्ण नहीं होती।

जीवन के संबंध में कहा गया **"अन्त भला तो सब भला"** जिसका अन्तिम समय, वृद्धावस्था और वह भी जब इन्द्रियां काम करना कम कर दें, शरीर अशक्त हो जावे वह यदि बिना कष्ट के बीते तो ही जीवन को भला जीवन कह सकते हैं।

अन्यथा बचपन और जवानी तो कैसे भी अभावों में, कष्टों में बीत जावेगी क्योंकि उस समय शारीरिक व मानसिक क्षमता किसी का प्रतिरोध व कष्टों को सहन करने के लिए सक्षम होती है। किन्तु वृद्धावस्था में परिस्थितियां अनुकूल न हों तो यह समय जीवन का अभिषाप बन जाता है।

यह स्थिति क्यों उत्पन्न होती है यह समझना आवश्यक है।

लंबी आयू जीना अच्छा है, प्रतिदिन संध्या में **"जीवेम शरदः शतं, श्रृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम् शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्"** कहकर 100 वर्ष तक जीने की परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

किसी बड़े व्यक्ति के पैर छूने पर जब कोई आशीर्वाद देता है तो 100 वर्ष तक जीने का आशीर्वाद देता है। 100 वर्ष से कम का आशीर्वाद कभी नहीं देते। परन्तु जीने का कोई उद्देश्य भी होना चाहिए केवल खाना–पीना और आराम करना, बीमार होकर स्वयं कष्ट उठाना, परिवार को कष्ट देना ऐसा जीवन कोई महत्व नहीं रखता।

आपकी इस स्थिति में परिवार तो सेवा करेगा ही यह उनका नैतिक कर्तव्य और पारीवारिक धर्म है। किन्तु यह **वृद्धावस्था बोझ न बनें हम किसी को अखरने न लगे इसलिए जीवन ऐसा बनाएं जिसमें हमारी दीर्घायु की कामना हम नहीं दूसरे व्यक्ति करें। जब दूसरे तुम्हारे जाने से दुःखी और रहने पर सुख, सुरक्षा का अनुभव करें, वही जीवन अच्छा है।**वेद मन्त्र में कहा गया है –

कुर्वन्नेह वेह कर्माणि जिजिविषेच्छतंUसमा।
एवं त्वयिनान्याथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

मंन्त्र के भाव हैं – हम 100 वर्ष तक जिएं किन्तु कर्मशील बनकर जिएं, स्वावलंबी रहे तथा सांसारिक भोग व सुख–सुविधा, परिवार, रिश्तों में लिप्त होकर न जिएं। पुनः वेद में मार्गदर्शन किया –

त्येन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।

त्याग भाव से लालच किए बिना इदन्नमम् की भावना से जिया गया, जीवन ही सुख और सम्मान प्राप्त करता है।

अच्छा जीवन तब होगा जब –

हम आए जगत में जगत हंसा हम रोए।
करनी ऐसी कर चलो हम हंसे जग रोए।।

मनुष्य जब अच्छे परमार्थ के कार्य करता है, दूसरों के आंसू पोछता है, दूसरों की खुशी में शामिल होता है, अपना त्याग करके दूसरों की भलाई करता है तब उसे अपने जीवन पर सन्तोष होता है।

अन्तिम समय में जीवन के किये गये अच्छे–बुरे कर्मों की चित्रावली एक फिल्म के समान उसके विचारों में आती है, बुरे कर्मों के कारण पछतावा, आत्मग्लानि और उसके दुष्परिणाम का भय उसे सताता है, दुःखी कर देता है, उसका समय गुजारना कठिन हो जाता है।

और यदि जीवन में अपने व अपने परिवार के अतिरिक्त दूसरों के हित का सोचा, कोई परमार्थ किया, उसकी सुखद यादें मन को सन्तोष देती है, मन को उत्साहित करती हैं। अपने किये हुए पर आत्मा प्रफुल्लित होती है। परिणाम इन सबसे मिला आत्मबल, सुख, वृद्धावस्था के कष्टों को भुला देता है तथा जीवन में स्वाभिमान होता है। ऐसा जीवन ही अच्छा जीवन कहा जा सकता है।

विदेशी दार्शनिक विद्वान सुकरात ने इस संबंध में बहुत महत्वपूर्ण बात कही, वे कहते हैं कि – **मनुष्य लम्बे समय तक जीना चाहता है। किन्तु आश्चर्य यह है कि वह अच्छे जीवन के लिए प्रयास नहीं करता।**

निश्चित रूप से सुकरात की बात में सत्य दर्शन वर्तमान समाज को देखकर होता है। आज हर कोई विलासिता के साथ सिर्फ भोग भोगने के उद्देश्यों के साथ लम्बा जीवन जीने का अभिलाषी है। वह बाहरी उपचार से अधिक आयु प्राप्त करना चाहता है किन्तु जीवन उन्नति, आत्म उन्नति जो जीवन की श्रेष्ठता का आधार है उस और ध्यान नहीं देना चाहता। सुकरात की उक्त बातों को पढ़कर दो पंक्तियां लिख दी –

मत फूल इस पर कि तू कितना जिया।
सोच ये कि जीकर तूने क्या किया।।

अपने किये हुए उन कर्मों पर जब भी हम विचार करें और लगे कि ऐसा भी कार्य किया है जिससे दूसरों को लाभ हुआ है तो सोचकर मन में प्रसन्नता का एहसास होता है, अपने किए पर सुखद अनुभूति होती है।

यह जीवन परोपकार के लिए है अच्छे जीवन में यह एक महत्वपूर्ण कड़ी है क्योंकि कहा गया है –

परोपकाराय फलन्तिवृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्याः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थ इदं शरीरम्।।

अर्थात् – परोपकार के लिए वृक्ष फल देते हैं, परोपकार के लिए नदी बहति है, परोपकार के लिए गाय दूध देती है तथा परोपकार के लिए ही यह शरीर है।

अच्छा जीवन क्या हो सकता है इस पर विचार करें तो वही जीवन अच्छा है जो चिन्ता, भय, राग, द्वेष और कष्टों से दूर तथा प्रसन्नता से भरा हो ऐसा जीवन ही अच्छा जीवन कहला सकता है।

संगठन भी सुख व अच्छे जीवन का आवश्यक अंग है। समस्त मानव समाज को एक परिवार का रूप दिया है समस्त मानवो को **"वसुदैव कुटुम्भकम"** कहा गया। ओर इसी भावना से **"सर्वेभवन्तु सुखिनः"** का द्योष हमारी सनातन संस्कृति में किया गया।

इन सब विचारों को सूत्र रूप में **महर्षि दयानन्द** ने हमारे समक्ष रखा और बताया। **"प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट नहीं रहना चाहिए, अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।"** इन्हीं विचारों से मानव समाज संगठित हो सकता है।

अच्छे जीवन का श्रृजन कैसे हो यह नीतिकार ने दर्शाया है – पहला समय विद्यार्थी् काल गया। इसमें स्वास्थ ओर ज्ञान को अर्जित करने का कहा गया। प्रारंभिक काल विद्यार्थी काल माना जाता है इस काल में पारिवारिक व अन्य जवाबदारियां उतनी नहीं होती है। इसलिए स्वाध्याय से शिक्षा, विद्या प्राप्त करनें के लिए समय रहता है। इस समय में अर्जित स्वास्थ व ज्ञान पूरे जीवन की पूंजी होती है, यही मानव रूपी इमारत की नींव है। इसलिए अज्ञान रूपी प्रकोप से बचने के लिए ज्ञान का अर्जन करना बहुत महत्वपूर्ण है।

विद्यार्थी काल के पश्चात भी विद्याध्यन ज्ञान का अर्जन स्वाध्याय, सत्संग से करते रहना लाभदायक है। इसके पश्चात अपने व परिवार के पालन पोषण व्यवस्था हेतु तथा परमार्थ कार्य धार्मिक कायों के लिए दान आदि के लिए धन कमाना। ध ान अनेक कार्यो। के लिए साधन है।

यदि पर्याप्त धन नहीं है तो जीवन के अनेक कायों को पूरा करने में अवरोध रहेगा अभाव रहेगा। अभाव हीन भावना व दुःख देता है। मनु ने कहा "मृत्यु और गरीबी में किसें चुने।" तो कहा मृत्यू को चुनना चाहिए। गरीबी रोज–रोज मारती है त्रासदायी होती है। इसलिए वेद का मन्त्र भी कहता है। **"वयं स्यां पतयो रयीणाम्"** हम धन ऐश्वर्य के स्वामी बनें" यहां एक बात ध्यान रखने की हे वह यह कि धन तो मिले पर हम उसके स्वामी बन कर रहे। हमारा स्वामी धन ओर हम उसके गुलाम न बनें। जिन पर लक्ष्मी सवार हो जाती हे तो वे अपना मानवीय अस्तिव छोड़कर आचार विहिन – पतित हो जाते है।

लक्ष्मी का वाहन उल्लू है जिस मनुष्य पर लक्ष्मी सवार हो गई, वह व्यक्ति उल्लू की श्रेणी में आ जाता है जिसे सूर्य के उजाले में भी दिखाई नहीं देता। ध्यान रहे धन हमारे जीवन में साधनों को पूर्ण करने का प्रमुख आधार है किन्तु जो धन स्वच्छता से प्राप्त हो वही हितकर ओर सुखकारी होगा। जो धन स्वच्छता शुद्धता निर्मल पद्धति से नहीं कमाया गया है वह काला धन कहलाता है।

इसलिए यश कीर्ति में उसी धन का सहयोग हे जो अच्छे प्रकार से प्राप्त की है पुनः एक वेद मन्त्र में आया

"अग्ने नय सुपथा राये अस्मान विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुराणमेनो भूथिष्ठान्ते नमउक्तिं विधेम।।

परमात्मा से धन सम्पती ज्ञान विज्ञान ओर राज्य की कामना की है परन्तु उस मार्ग पर चलते हुए जिस पर धार्मिक, प्रतिष्ठित , आप्त व्यक्तियों ने चलकर यह सब प्राप्त किया। इसी प्रकार का धन सुख, सन्तानय ओर ऐश्वर्य की वृद्धी करने में सहायक है। धन का होना भी अत्यन्त आवश्यक है तभी ब्रह्मचारियों, सन्यासियों ओर, समाज ओर राष्ट्र के लिए आर्थिक रूप से सहयोगी बन सकेगें।

तीसरा कार्य अच्छे जीवन का है पुण्य कमाना। पुण्य का अर्थ है दूसरो को सुख, सहयोग, सुविधा प्रदान करने के लिए प्रयास करना ओर उन्हें सहयोग देना। जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले कार्यो को करना। परमार्थ जैसे कार्यो को तन– मन – धन से करना। यह जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धी है जीवन की सार्थकता भी इसी में निहित है। सत्याचरण, धर्माचरण, परोपकार, यह जीवन की सुगन्धी है यही आचरण पुण्य की श्रेणी में आता है।

उपरोक्त तीन बातें एक अच्छे जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी ओर महत्वपूर्ण है। इन पर ध्यान नहीं दिया तो इनके अभाव में जीवन का कोई अस्तित्व ही नहीं रह जाता – नीतिकार ने लिखा –

प्रथमे नार्जिता विद्या,
द्वितिये नार्जितं वितं,
तृतिये नार्जितं पुण्यं,
चतुर्थे किम करिष्यति।

कहा यदि प्रथम विद्या (ज्ञान) प्राप्त नहीं किया दूसरे काल में धन नहीं कमाया तीसरा पुण्य नहीं कमाया तो चौथे में क्या करेगा। अर्थात जीवन व्यर्थ है।

इसलिए मानव जीवन की सार्थकता लम्बी आयु तक ही सीमित न समझें जीवन सार्थकता अच्छें जीवन जीने में है।

कुछ व्यक्ति बहुत लम्बी आयू प्राप्त कर रोगी रहते हुए शारिरिक व मानसिक भोग भोगते देखे जाते है यह जीवन किसी के लिए नहीं अपने तक सीमित है।

किन्तु महर्षि दयानन्द, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, पं, रामचन्द्र बिस्मिल कम आयू में ही सदा सदा के लिए जी कर अमर हो गए, इसीलिए कहा।

यू तों आदमी जन्म लेते और मरते है
जन्म मिलने पर भी पूरा लाभ नहीं लेते हैं
मृत्यु के पहले भी मरते है कई
पर मौत वही जो मरने, के बाद जीते है

इसलिए जीवन की इस यात्रा में आने वाली बाधाओं को जो रागद्वेष, मोह माया, अज्ञान है से हटकर एक अच्छा सुखद ज्ञानमय, परमार्थ से, सुगन्धी से पूर्ण अच्छा जीवन जीने का प्रयत्न कर, जीवन अच्छा बनाना चाहिए।

– **प्रकाश आर्य**, महू

आस्था चैनल पर वैदिक प्रवचन

आस्था चैनल पर प्रतिदिन रात्रि 9.30 पर विचार टी. वी. के माध्यम से वैदिक विद्वानों के प्रवचनों का प्रसारण प्रारंभ हो गया है। आप स्वयं देखें व दूसरों को जानकारी देवें।

मुझ सा बुरा न कोय

मैं कथा कह रहा था करौल बाग के आर्य समाज में। एक सज्जन रात के समय मुझे दूध पिलाने के लिए अपने घर ले गये। घर में जाकर बैठे ही थे कि बिजली फैल हो गई। अन्धकार हो गया। अब वे सज्जन लगे सरकार को कोसने, कैसी सरकार है यह ! जबसे इनका राज्य हुआ, तब से कोई कार्य ठीक प्रकार से नहीं होता। अब देखो, बिजली ही चली गई।

मैंने कहा – राज्य को कोसने से कुछ करेगा नहीं। आपके घर में कोई मोमबत्ती आदि होगी, उसे जला लीजिए, कार्य चल जायेगा।

तब उन्होंने पुकारा – ओ कुक्कू की मॉ। दियासलाई तो ला। देख, मोमबत्ती कहॉ है ?

अब कुक्कू की मॉ ने दियासलाई ढूँढ़नी आरम्भ की। अन्धेरे में इधर देखा, उधर देखा, कहीं भी उसे दियासलाई नहीं मिली। अन्ततः सिगरेट पीने वाले एक सज्जन से दियासलाई ली गई। मोमबत्ती की खोज आरम्भ हुई। इस अलमारी में, उस अलमारी में, यहॉ–वहॉ। सलाइयॉ एक–एक करके घिसाई जा रही हैं, मोमबत्ती की खोज हो रही है, परन्तु मोमबत्ती है कि मिलने का नाम ही नहीं लेती। दियासलाई वाले ने कहा – तीलियॉ तनिक देखकर खर्च कीजिये, ऐसा न हो कि मोमबत्ती मिले तो डिबिया में तीलियॉ समाप्त हो जायें।

इस भाग दौड़ में बिजली फिर आ गई। प्रकाश हो गया। वे सज्जन बैठे, फिर बोले–राज्य का प्रबन्ध ही सारा खराब है। जिस विभाग को देखो, उसी में त्रुटि है। कितना समय इन लोगों ने नष्ट कर दिया।

मैंने यह आलोचना सुनी तो हँसते हुए कहा – राज्य का प्रबन्ध तो अच्छा है या बुरा, परन्तु तुम अपने घर का प्रबन्ध तो देखो। न दिया सलाई रखने का ठिकाना, न मोमबत्ती रखने का स्थान और कोसा जाता है राज्य को। राज्य क्या तुम्हारे घर का भी प्रबन्ध करेगा ?

यह है हमारा स्वभाव। देखनी चाहिये अपनी त्रुटि। हम दूसरों की त्रुटियों को ही देखते रहते हैं।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।
मन जो अपना देखिया, मुझसे बुरा न कोय।।

महर्षि द्वारा रचित ग्रंथों का परिचय

आर्योद्देश्यरत्नमाला

प्रश्न 1 : इस पुस्तक का विषय क्या है ?

उत्तर : इसमें महत्वपूर्ण व्यवहारिक शब्दों (आर्यों के मन्तव्यों) की परिभाषाएं प्रस्तुत की गइ हैं, जो वेदादि शास्त्रों पर आधारित हैं।

प्रश्न 2 : कितने मन्तव्यों का अर्थ दिया गया है ?

उत्तर : इसमें 100 मन्तव्यों (नियमों) का संग्रह है। अर्थात् सौ नियमों रूपी रत्नों की माला गूंथी गई है।

प्रश्न 3 : पुस्तक में कौन सी भाषा का प्रयोग है ?

उत्तर : हिन्दी भाषा का।

प्रश्न 4 : पुस्तक का उद्देश्य क्या है ?

उत्तर : धर्म व व्यवहार में आने वाले इन शब्दों एवं नियमों का सच्चा व वास्तविक अर्थ समझकर व्यक्ति भटकने से बच जाए। अतः सब मनुष्यों के हितार्थ लिखी गई।

प्रश्न 5 : रचना का समय क्या है ?

उत्तर : विक्रमी संवत् 1934, श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी, बुधवार के दिन पूर्ण हुई।

प्रश्न 6 : क्या इस पुस्तक को किसी अन्य भाषा में भी अनुवाद हुआ है ?

उत्तर : हॉ, इसका अंग्रेज़ी भाषा में भी अनुवाद किया गया है।

व्यवहारभानु

प्रश्न 1 : क्या महर्षि ने व्यवहारभानु नामक ग्रंथ की भी रचना की है?

उत्तर : हॉ, महर्षि ने व्यवहारभानु नामक एक अन्य उपयोगी ग्रंथ भी लिखा है।

प्रश्न 2 : इस ग्रंथ को लिखने का क्या प्रयोजन था ?

उत्तर : जैसा कि इसके नाम से ही विदित होता है, व्यवहार का सूर्य या व्यवहार रूपी सूर्य। जैसे सूर्य के प्रकाश में अन्धकार समाप्त होकर सब कार्य भली प्रकार सिद्ध होते हैं, उसी प्रकार जो व्यक्ति व्यवहार में कुशल होता है, वह जीवन में सुख व सफलता प्राप्त करता है। अतः महर्षि ने सबको, विशेषकर बालकों को, यथायोग्य व्यवहार की शिक्षा देने के लिए इस ग्रंथ को रचा। महर्षि के अपने शब्दों में **"व्यवहारभानु ग्रंथ को बनाकर**

प्रसिद्ध करता हूं कि जिसको देख–दिखा, पढ़–पढ़ाकर मनुष्य अपने और अपने– अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।"

प्रश्न 3 : क्या इसमें केवल व्यवहार की शिक्षा ही दी गई है ?

उत्तर : नहीं, व्यवहार के अतिरिक्त विद्या–अविद्या, धर्म–अधर्म, कर्तव्य–अकर्त्तव्य, सत्य–असत्य, मूर्ख–अमूर्ख, पण्डित–अपण्डित, न्याय–अन्याय आदि अनेक विषयों का परिचय व ज्ञान प्रश्न–उत्तर के माध्यम से कराया गया है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा प्रदान करने की विधि, ब्रह्मचर्य, राजा आदि अनेक विषयों को भी लिया गया है।

प्रश्न 4 : क्या इसमें केवल पारिवारिक व्यवहार का उल्लेख है अथवा अन्य भी ?

उत्तर : इसमें माता–पिता व सन्तान के आपस में व्यवहार के अतिरिक्त बालक से लेकर वृद्ध पर्यन्त मनुष्यों के सुधार के लिए आचार्य, विद्यार्थी, राजा–प्रजा, धार्मिक, अधार्मिक, मूर्ख, बुद्धिमान, पति–पत्नी इन सबको भी आपसी व्यवहार में कुशलता प्राप्त करने की शिक्षा प्रदान की गई है।

प्रश्न 5 : इससे तो विदित होता है कि यह ग्रंथ बहुत उपयोगी होगा?

उत्तर : हॉ, निश्चित रूप से यह ग्रंथ बहुत उपयोगी है। इसके पठन से जहॉ विद्या पढ़ने–पढ़ाने की प्रेरणा मिलती है, वहॉ यह भी पता चलता है कि जो मनुष्य विद्या कम भी जानता है, परन्तु दुष्ट व्यवहारों को छोड़कर धार्मिक हो के खाने–पीने, बोलने, सुनने, बैठने, उठने, लेन–देन आदि व्यवहार सत्य से युक्त होकर यथायोग्य रूप से करता है, वह कहीं कभी दुःख को प्राप्त नहीं होता। इसके विपरीत जो उच्च विद्या पढ़कर भी उत्तम व्यवहार नहीं करता, दुष्ट कर्म करता है, वह कभी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। इस प्रकार यह सुख प्राप्ति का मार्ग दर्शक ग्रंथ है।

प्रश्न 6 : यह ग्रंथ किस भाषा में लिखा गया है ?

उत्तर : यह ग्रंथ सरल हिन्दी भाषा में लिखा गया है, जिससे सभी इसे सुखपूर्वक समझकर अपना व्यवहार व स्वभाव सुधार कर उत्तर कार्य कर सकें। बीच बीच में संस्कृत भाषा में प्रमाण भी दिये गये हैं। अनेक मनोरंजक दृष्टांत देकर अभिप्राय स्पष्ट किया गया है। इससे ग्रंथ बहुत अधिक सरल एवं रूचिकर बन गया है।

प्रश्न 7 : व्यवहारभानु की रचना कब हुई ?

उत्तर : इस ग्रंथ की रचना काल संवत् 1936, फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष की 15 वीं तिथि है। इसे महर्षि ने काशी में लिखा था।

क्रमशः ....

पेट के रोगों में गुणकारी : नींबू

अम्लता (एसिडिटी) : खाना खाने के बाद एक कप पानी मे आधा नींबू, जरा सा खाने का सोडा मिलाकर प्रतिदिन दो बार पियें।

दोपहर के भोजन से आधा घण्टा पहले नींबू की मीठी शिकंजी दो महीने तक पियें। खाने के बाद न पियें।

खट्टी डकारें : यदि खट्टी डकारें आती हों, तो गरम पानी में नींबू निचोड़कर पियें।

पेटदर्द : पचास ग्राम पोदीना की चटनी पतले कपड़े में निचोड़कर रस निकाल कर उसमें आधा नींबू निचोड़े, दो चम्मच शहद और चार चम्मच पानी मिलाकर पीने से पेट का तेज दर्द शीघ्र बन्द हो जाता है।

एक नींबू, काला नमक, काली मिर्च, चौथाई चम्मच सोंट, आधा गिलास पानी में मिलाकर पीने से पेटदर्द ठीक हो जाता है।

आजवाइन, सेंधा नमक को नींबू के रस में भिगोकर सुखा लें। पेटदर्द में एक चम्मच चबाकर, पानी पियें। इस प्रकार हर एक घण्टे में, जब तक दर्द रहे, लें। पेट पर सेंक करें।

कीड़ों के कारण पेट में दर्द हो, पेट में कीड़े हों तो सात दिन दो बार नित्य नींबू की एक फांक में पिसा हुआ जीरा, काली मिर्च, काला नमक भरकर चूसें।

मूली पर नमक, नीबू, काली मिर्च डालकर खाने से अपच का पेट का दर्द ठीक हो जाता है।

आधा कप मूल के रस में आधा नींबू निचोड़कर नित्य दो बार पीने से खाना खाने के बाद होने वाला पेटदर्द ठीक हो जाता है।

कब्ज : गरम पानी और नींबू प्रातः भूखे पेट खाएं। एक गिलास हल्के गरम पानी में एक नींबू निचोड़कर एनिमा लगाएं, पेट साफ हो जाएगा। कीड़े भी निकल जाएंगें।

एक मिलास गर्म पानी में एक नींबू, दो चम्मच अरण्डी का तेल (कैस्टर ऑयल) मिलाकर रात को पियें।

एक चम्मच मोटी सौंफ तथा पांच काली मिर्च चबायें, फिर एक गिलास गरम पानी, एक नींबू और काला नमक मिलाकर नित्य पियें।

उल्टी : आधा कप पानी में पन्द्रह बूंद नींबू का रस, भुना एवं पिसा हुआ जीरा, पिसी हुई एक छोटी इलायची मिलाकर आधे घण्टे में पियें। उल्टी बन्द हो जाएगी।

नींबू के छिलके सुखाकर, जलाकर राख बना लें, चौथाई चम्मच राख, आधा चम्मच शहद में मिलाकर चाटने से उल्टी बन्द हो जाती है।

दो छोटी इलायची पीसकर नींबू की फांक में भरकर चूसने से उल्टी बन्द हो जाती है।

2 अक्टूबर

दो अक्टूबर का दिन कितना महान हैं,
इससे जुड़ा शास्त्री और गाँधी का नाम हैं।
साल भर में एक बार इन्हें भी याद करते हैं,
जैसे श्राद्ध पक्ष में पितरों के नाम से भोजन धरते हैं।
बदले जमाने में इनका अब क्या काम हैं,
अब तो जी हुजुरी ही राजनीति का नाम हैं।
खुद का कद बढ़ाने के लिए आदर्श खोना जरूरी हैं,
इनको भुला देना ही सफल नेता की मजबूरी हैं।
फिर भी दोगले ना कहलावें इसलिए याद करते हैं,
एहसान फरामोश न कहलाए इसलिए समाज से डरते हैं।
इनके विचार इतिहास बन कर रह गए,
वर्तमान परिपेक्ष्य में जाने कहां ढ़ह गए।
समय के साथ नीति में भी बदलाव आया हैं,
सेवा, भक्ति की जगह व्यापार ने स्थान पाया हैं।
इसलिए बदले नजरिये में लाभ–हानि देखना पड़ता हैं,
सत्य, ईमानदारी पर चलने से आज हर नेता डरता हैं।
अब एक नया इतिहास राजनीति बनाती जा रही,
पारस बनकर गरीबी हटाती जा रही।
राजनीति ने कई सड़कछापियों को कोठी तक पहुँचाया हैं,
रातों रात बनी तकदीर कमाल देखने में आया हैं।
इसलिए बापू हो चाहे बहादुर,
एक ही नारा चल रहा सब दूर ।
हमें तो वर्तमान और अतीत दोनो को देखना हैं,
जले किसी का घर हमे तो रोटी सेकना हैं।

कल दोनो नेताओ की स्टेच्यू पर हार पहनावेगे,
दूध और पानी से नहलावेगे।

कल के लिए सुन्दर भाषण तैयार किया हैं,
जिसमे वर्तमान स्थिति पर जमकर वार किया हैं।

जनता को मोहने का यही तो मन्त्र हैं,
बनती रहे मूर्ख जनता वही प्रजातन्त्र हैं।

कल दिन भर का व्यस्त कार्यक्रम बना हैं,
हम भी पापुलर हो जावे ऐसा सपना हैं।

लगता हैं हम इसे जरूर कर पावेंगे,
करनी कुछ भी हो पर हमी पुजावेगे।

कुर्सी यहां सब पर भारी हैं,
बन्धे इससे कई अत्याचारी हैं।

इसलिए मन पर दिलो दिमाग पर इसका प्रभाव हैं,
फिर समाज में दूर दृष्टि का अभाव हैं।

इसका पूरा पूरा लाभ हम उठाते हैं,
करते जुर्म पर सम्मान पाते हैं।

सभी अपनी धुन में हैं मस्त सब देश की न सोचते हैं,
इसीलिए दूध की रखवाली बिल्ली को सौपते हैं।

फोटू तो हम दोनों की ही टांगेगे,
पर ग्यारन्टी नहीं की हम उनकी मानेंगे।

– प्रकाश आर्य, मह्‌ू

शुद्ध वायु, सात्विक भोजन एवं स्वच्छ जल।
इनके सेवन से जीवन बने निर्मल।।

मृतक श्राद्ध तर्पण एक चिन्तन

श्राद्ध और तर्पण करना है तो जीवित पितरों का करना चाहिए।

– प्रकाश आर्य, महू

जीवन अनेक मान्यताओं को मानते हुए बीत जाता है किन्तु उन मान्यताओं का मूल उद्देश्य क्या हैं, उसे क्यों मानते है, इसकी जानकारी अधिकांश व्यक्तियों को अन्तिम समय तक भी नहीं होती। पीपल, बड़, तुलसी, गाय इन्हें मात्र धार्मिक मान्यताओं के कारण ही इनकी पूजा की जाती है। किन्तु इसके पीछे जो कारण है उससे बहुत कम व्यक्ति परिचित हैं। वास्तव में उपरोक्त चारों की मान्यता का मुख्य कारण उनसे मानव जीवन की अत्यन्त उपयोगिता है। पीपल व बड़ हमेशा ऑक्सिजन देते हैं, तुलसी में पारा है, जो वात, पित्त, कफ का नाश करती है और गाय तो अद्भुत कृति है, जिसके हजारों लाभ है। ये सब जीवन उपयोगी, जीवन रक्षक तत्वों से भरे हैं।

इसी प्रकार अनेक पर्व मनाते तो हैं किन्तु उनके प्रदर्शन तक ही सीमित है, उसको मनाने के पीछे क्या दर्शन है, इसे बहुत कम जानते हैं, किन्तु फिर भी मनाते हैं।

यही स्थिति श्राद्ध के संबंध में है, श्राद्ध के साथ तर्पण शब्द भी बोलने में आता है। श्राद्ध और तर्पण प्रत्येक को करना चाहिए इसका समर्थन मैं भी करता हूं, किन्तु कैसे करना चाहिए ये समझें जो प्रचलित मान्यता से भिन्न है।

श्राद्ध से तात्पर्य श्रद्धा से है। श्र में जो (ा) की मात्रा लगी है वह द्ध के आगे लगा देवें तो श्रद्धा हो जावेगी। श्राद्ध करने वालों में मृतक पितरों के प्रति श्रद्धा होती है। कुछ इसे सामाजिक लाज के कारण करते हैं जो श्राद्ध नहीं मात्र औपचारिकता ही है। इसी प्रकार तर्पण का अर्थ है किसी की इच्छा को पूर्ण कर उसे तृप्त करना।

श्रद्धा भाव से जब हम किसी को तृप्त कर देवें तो उसे श्राद्ध और तर्पण कहते हैं। थोड़ा विचार करें कि जिसके प्रति श्रद्धा भाव रखते हुए, तृप्त करना चाहते है, वह जीवित है या मृत ?

वस्त्र, भोजन, सेवा, औषधि, धन आदि से तो तृप्त किसी जीवित को ही किया जा सकता है। परन्तु जो शरीर अब नहीं है, जलकर पंचतत्व में विलीन हो गया उसे ये वस्तुओं को कैसे दे सकते हैं ? कैसे उसे तृप्त कर सकते हैं ? पुर्नजन्म ले चुकी आत्मा के संबंध में सोचें तो शरीर छोड़कर जो दूसरा शरीर धारण कर चुकी है, अब उस आत्मा का कैसे पता चलेगा कि वह कहां हैं ? कैसे पता चलेगा उसने कौन–सा रूप धारण किया है ? यह भी हो सकता है कि उसको मोक्ष ही प्राप्त हो गया हो। इन परिस्थितियों में हम जिसका तर्पण करना चाहते हैं उस तक कैसे पहुंच पायेगें ? फिर उनके नाम पर दिए जाने वाले पदार्थ, भोजन सामग्री दूसरे उपयोग करते है वह उन तक कैसे पहुंचेगी जिनका कि हमें पता ही नहीं है।

एक बात पर कभी ध्यान नहीं दिया, न कभी किसी ने दिलाया, वह यह कि श्राद्ध करके हम अपने मृतक स्वजन के शरीर को तृप्त करना चाहते हैं या आत्मा को ? भोजन, वस्त्र, पैसा, अन्य वस्तुएं भौतिक हैं जो शरीर के लिए उपयोगी है, आत्मा का इनसे कोई संबंध नहीं। आत्मा का किसी से कोई रिश्ता नहीं, उसके लिए शरीर ग्रहण करना और त्यागना एक सामान्य प्रक्रिया है। अनन्त शरीरों को संयोग उससे होता रहा और जब तक भोग पूरे नहीं होगें तब तक आगे भी होता रहेगा।

हमें तो यह भी नहीं मालूम कि इस शरीर को छोड़ने के पश्चात किस प्रकार के शरीर को (मनुष्य, पशु, पक्षी, जीव जन्तु आदि) धारण किया है।

हमारी धारणा के विपरीत कर्म व्यवस्था के अनुसार उन्हें मानव जन्म न मिलते हुए और कोई प्राणी की योनी प्राप्त हो गई हो।

और उपरोक्त दोनों स्थिति से हटकर उन्हें सद्गति मोक्ष ही प्राप्त हो गया हो। यह सब हमारे सामने अस्पष्ट है।

किन्तु हम अपने मृत पूर्वजों का श्राद्ध व तर्पण उस स्थिति को मानकर ही करते हैं, उसे अभी भी वैसा ही मान रहे हैं जैसे वे जीवित अवस्था में आपके परिवार के साथ थे। क्या यह मान्यता व तर्पण की स्थिति ठीक है ?

जीव की तृप्ती उसकी मनपसन्द इच्छा पूर्ण होने पर होती है। किन्तु जब हमें उनके पुर्नजन्म की कोई जानकारी ही नहीं है तो उनकी इच्छाओं का कैसे पता चलेगा ? फिर दूसरा पहलू यह भी कि भोजन आदि मृतक शरीर को हम नहीं पहुंचा सकते। शरीर में से आत्मा निकल जावे तो मृत शरीर जो शव हो गया उसे एक बून्द पानी नहीं पिला सकते, अन्न का एक कण उसे नही खिला सकते। जो शरीर चिता पर जलकर भस्म हो गया जिसका अस्तित्व संसार में नहीं है, उसे हम कैसे कुछ खिला सकते हैं ? भोजन का महत्व शरीर के लिए है, आत्मा के लिए नहीं। किसी भी भौतिक वस्तु से आत्मा की संतुष्टि नहीं होती।

वास्तव में तर्पण करने पर जब कोई तृप्त हो जावे तो ही तर्पण करना सार्थक है और वह किसी जीवित व्यक्ति का ही हो सकता है। प्रचलित सामाजिक व्यवस्था में अनेक जीवित माता–पिता (पितर) अभाव का जीवन बिताते देखे जाते हैं। किन्तु उनके न रहने पर वस्तु भेंटकर भोज या श्राद्ध पक्ष में भोजन करवाकर अपने कर्तव्यों का पालन करते देखा है।

आज वृद्धों की वृद्धाश्रमों में बढ़ती संख्या इसी बात का प्रमाण है। पति–पत्नि और बच्चों के बीच सिमटते परिवार आज अपने बेटे, बहुओं, पौते, पौतियों से दूर वृद्धाश्रमों की शरण लेते देखे जा सकते हैं। अभाव, उपेक्षा, अकेलेपन में जीवन का अन्तिम समय बिताने वालों के मरने के बाद लोक लाज से या अन्ध परम्परा के कारण उनकी गति परिवार के लोग दूसरों को भोजन, वस्त्र दान करके सुधारते हैं, उनका श्राद्ध व तर्पण पवित्र नदियों में जाकर करते हैं। ऐसा करके वे

अपने पूर्वजों के प्रति अपने कर्तव्य की पूर्णता भानते हैं और अपने को उनके कर्ज से मुक्त कर लेते हैं। यह सब अज्ञानता के कारण हो रहा है, जीवित माता पिता की सेवा उनकी तृप्ति को अनदेखा कर उन्हें दुःख देने के बाद मरने के बाद उन्हें स्वर्ग, मोक्ष के लिए उनकी शान्ति के लिए श्राद्ध व तर्पण करते हैं, यह कहॉ तक उचित है।

सनातन व्यवस्था में अन्तिम संस्कार अन्त्येष्ठि है जीव की मुक्ति, पुर्नजन्म या मोक्ष तो जीव को उसके अपने कर्मों के अनुसार प्राप्त होगा। उसके परिवारजन, मित्र या सहयोगी तो उसके शरीर का अन्तिम संस्कार ठीक प्रकार से घृत व सुगंधित पदार्थों से कर सकते हैं, इसके बाद मृतक का कोई सहयोग किसी प्रकार का नहीं कर सकते।

यदि मरने के पश्चात मृतक के नाम पर उसे स्वर्ग या मोक्ष दिलाने के लिए पूजा–पाठ–तर्पण–तीर्थ स्नान, पिण्ड दान करके उसे सब दिलाया जा सकता है तो फिर प्रत्येक सम्पन्न व्यक्ति को तो अगला जीवन अच्छे से अच्छा उसके वारिस उसके धन से करा देगें। फिर तो परमात्मा की व्यवस्था निरर्थक हो जावेगी उसके न्याय में बाधा उत्पन्न हो जावेगी। **"अवश्व मेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्"** का सिद्धान्त जिसके अनुसार प्रत्येक जीव को शुभ–अशुभ कर्मों को भोगना ही पड़ता है यह नष्ट हो जावेगा। न्याय करने, कर्म का फल देने का एकमात्र अधिकार परमात्मा का है, वह उससे छिन जावेगा।

इसलिए अन्धविश्वास व गलत परम्परा को छोड़कर श्राद्ध व तर्पण के सही अर्थ को समझें, उसी अनुसार इसे मनाने में इसकी सार्थकता है।

एक और भ्रान्ती है, श्राद्ध जिन पितरों के लिए करने की मान्यता है वहां पितर शब्द जो दिवंगत है सिर्फ उनके लिए ही समझा जा रहा है। किन्तु वास्तव में जिनकी मृत्यु हो चुकी है केवल वे ही पितर माने जाते हैं ऐसा नहीं है।

हमसे बड़े माता–पिता, दादा–दादी जो जीवित हैं सभी पितर की श्रेणी में आते हैं। अर्जुन ने युद्ध न करने के लिए योगीराज कृष्ण को यही कहा था – सामने मेरे बन्धु बान्धव, पितर खड़े हैं इन पर कैसे प्रहार करूं। इसलिए पितर का अर्थ केवल मृतकों से नहीं मानना चाहिए।

कई ग्रंथों में मृतक श्राद्ध व भोजन की निन्दा की गई है।

स्मृतियों ने श्राद्ध भोजन को अच्छा नहीं माना है, उन्होंने श्राद्धी भोजन खाने वालों को दोषी माना है और प्रायश्चित्त का विधान किया है। आजकल बहुत से विद्वान, ब्राह्मण श्राद्ध भोजन से बचते हैं।

मिताक्षरा (याज्ञवल्क्य स्मृति. 2–286) का कहना है कि भारद्वाज के अनुसार यदि कोई ब्राह्मण श्राद्ध भोजन करे तो उसे प्रायश्चित स्वरूप छः प्राणायाम

करने चाहिए। यदि वह किसी की मृत्यु के तीन मास से लेकर एक वर्ष के भीतर श्राद्ध भोजन करता है तो उसे एक दिन का उपवास करना चाहिए। इसी प्रकार पृथक–पृथक श्राद्धों में भोजन करने पर चन्द्रायणादि व्रत तक करने का प्रायश्चित निर्धारित किया गया है। वराह पुराण के अनुसार यदि कोई ब्राह्मण श्राद्ध भोजन खाकर उसे पेट में भरे हुए मर जाय तो वह एक कल्प तक भयंकर नरक में रहता है। फिर राक्षस का जन्म पाता है, तब पाप से छुटकारा मिलता है।

इस प्रकार इस विचार से तो श्राद्ध भोजन एक पाप कर्म है और श्राद्ध भोजी ब्राह्मण पापी होता है, यह स्वतः सिद्ध हो गया है।

मृतक श्राद्ध को श्रेष्ठ कर्म नहीं माना – कुछ ऐसे प्रमाण भी पाए जाते हैं जिनमें मृतक श्राद्ध को सत्पुरूषों द्वारा गर्हित एक निन्दित कर्म माना गया है। उदाहरण के लिए महाभारत में राजा निमि का कथानक है जिसका श्रीमान पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया, निमि ने शोकाकुल होकर स्वपुत्र का श्राद्ध किया और बाद में पश्चाताप करने लगा। यथा –

तत् कृत्वा स मुनि श्रष्ठो धर्म संकरमात्मनः।
पश्चातापेन माता तप्यमानोऽभ्यचिन्त यत्।।
अतम् मुनिभिः पूर्व किम्मयेदमनुष्ठितम्।
कथं नु भापेन न मां दहेयुर्ब्राह्मणा इति।

– महाभारत अनु. पर्व अ. 91 लोक 16, 17

मृतक श्राद्ध में प्रदत्त भोजन पितरों को नहीं मिलता पुराणों में ऐसे भी प्रमाण मिलते हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि मृतक श्राद्ध में दिये गये ब्राह्मण भोजन व पिण्ड आदि का भोजन पितरों को नहीं मिलता। मृतक श्राद्ध समर्थक ब्राह्मणों के इस दावे का कि श्राद्ध में प्रदत्त भोजन पितरों को उनके अगले जन्म में भी मिलता है। खण्ड करने वाली एक कथा भविष्य पुराण में वर्णित है।

कथा – विदर्भ देश में भयेनजीत राजा के राज्य में सुमति नामक ब्राह्मण पत्नि जयश्री के साथ रहता था। जब वे दोनों मरे तो अपने पुत्र के यहां पर ही सुमति बैल बना और उसकी पत्नि कुतिया। सुमति के पुत्र ने जिस दिन अपने माता–पिता का श्राद्ध किया, उसी दिन उसने बैल को खूब मारा और दिनभर भूखा रखा तथा उसकी स्त्री ने कुतिया की कमर तोड़ दी। रात को दोनों (कुतिया और बैल) ने परस्पर वार्तालाप करते हुए कहा – कि इसने व्यर्थ ही श्राद्ध किया, हम तो भूख से तड़प रहे हैं। यह कथा पुराण अ. 78 श्लोक 40, 41 तथा पद्मपुराण उत्तर खण्ड 6 अध्याय 78 में भी आई है।

इसके अतिरिक्त गरूढ़ पुराण में कहा गया है कि उपवास से मरने वाले जहरीले जन्तु के काटने पर हैजे से, आत्म हत्या, गिरने, बांध और पानी में डूबकर

मरने वाले, भूचाल, पहाड़ कटने, जंगली जानवरों के द्वारा या बिजली से मरने वाले, दीवार गिरने, खाट पर लेटे हुए मरने वाले, चोर, चाण्डाली के संबंध से मरने वाले, शस्त्र की चोंट से, कुत्ते के काटने से मरने वाले, उपर–नीचे से उच्छिष्ट और विधिहीन मौत मरने वालों को भी श्राद्ध भोजन नहीं मिलता, अतः इनका श्राद्ध नहीं करना चाहिए। जबकि आप जानते हैं अनेक मौतें इसी प्रकार होती हैं, पर आज उनका भी श्राद्ध हो रहा है।

मृतक श्राद्ध और शैयादान – गरूढ़ पुराण प्रेतखण्ड (34–69) पद्य पुराण ने मरने वालों के नाम से शैयादान करने की बड़ी प्रशंसा की है। परन्तु पद्य पुराण में ही इसे एक निन्दित कर्म कहा गया है और शैयादान लेने वाले की निन्दा की गई है। और प्रायश्चित का विधान किया गया है। वहां कहा गया है कि शैयादान वेदों और पुराणों में गर्हित माना गया है और जो लोग इसे लेते हैं वे नरक·गामी होते हैं।

गरूढ़ पुराण 2–5–40 से 45 श्लोक तक

लेख में जीवित पितरों के संबंध में उपर बताया गया है। यहाँ इसका तात्पर्य यह नहीं कि मृत पितरों को भूल जावें। वास्तव में मृत पितरों को भी हम सदैव याद रखें, उनके आदर्शों, उनकी अच्छाईयों को याद करते हुए अपने जीवन में उनके सद्गुणों, आदर्शों को धारण करने का प्रण करें। उनके प्रति सच्ची श्रद्धा, उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर हम व्यक्त कर सकते हैं। इसी भावना से समाज में हजारों प्रतिमा–मूर्तियों का प्रचलन भी हुआ, हमारे जिन पितरों ने अपने यशस्वी जीवन को व्यतीत कर हमारे परिवार को गौरवान्वित किया है, उनका अनुसरण करना, उनके कार्यों को और आगे बढ़ाना ही श्राद्ध होगा, और उनको श्रद्धांजलि होगी, जो प्रत्येक व्यक्ति को करना ही चाहिए।

आम तौर पर मात्र वर्ष में 16 दिन तक पितरों (पूर्वजों) को संतुष्ट करने के समय को ही श्राद्ध पक्ष माना जाता है। इस अवधि में चील–कौओं आदि पक्षियों या अपने उपास्य देवता तथा ब्राह्मणों को भोजन करवाने, दान देने को ही श्राद्ध माना जाता है। इसके द्वारा दिवंगत आत्माओं के प्रति तर्पण कर उन्हें सन्तुष्ट किया जाता है, किन्तु हमारे सनातन धर्म में ऐसा नित्य करने को पितृ यज्ञ कहा है। यहीं पर विचार करने की आवश्यकता है।

श्राद्ध का अर्थ – **श्रात सत्यं धार्यते यया सा श्रद्धा।**
श्रद्धयायत, कियते तत् श्राद्धम्।।

जिससे सत्य को धारण किया जावे उसे श्रद्धा कहते हैं और जो कार्य श्रद्धा से किया जावे उसे श्राद्ध कहते हैं।

आचार्य मनु द्वारा मनु स्मृति में दर्शाया है –

कुर्यादहरहः श्राद्धमन्ना द्येमो दकेन वा।
पयो मूल फलैवाऽपि पितृभ्यः प्रीतिमावहन।

अर्थात् – गृहस्थ प्रतिदिन पितरों (माता–पिता, पितामाह आदि वृद्धजनों को) प्रीतिपूर्वक भोजन, जल, दूध, फल पदार्थ देकर श्राद्ध करे अर्थात् जीवित जनों को तृप्त करना श्राद्ध है। चारों वेदों में मृतक श्राद्ध का कहीं उल्लेख नहीं है।

श्राद्ध का अर्थ यहां होगा **"श्रद्धया पितृभ्यः यत् कियते तच्छाद्धम्"** अर्थात् पितरों के लिए किए जाने वाले कर्म हैं उसे श्राद्ध कहते हैं। पितर शब्द संस्कृत का जो पा धातु से बना है। पित् शब्द का बहुवचन एक से अधिक पिता पितर होता है। पिता कई प्रकार के होते हैं। जन्मदाता व परमपिता परमात्मा के अतिरिक्त भी पिता हैं।

जनिता चोपनेता च यश्च विद्या प्रयत्छति।
अन्नदाता भयत्राता पंचैते पितरः स्मृत।।

– चाणक्य नीति

इसी प्रकार ब्रह्मववर्त में दर्शाया –

अन्नदाता भयत्राता, पत्नी तातस्तभवत,
विद्या दाता पेचैते पितरो नृणाम।।

अर्थात् – जन्म देने वाला, उपनयन संस्कार करवाने वाला, विद्या देने वाला, भय से मुक्ति दिलाने वाला ये पांचों पिता हैं। पत्नि के पिता को भी पिता दर्शाया है।

जो सामर्थ्यहीन क्षीण हो उन्हें भी पितर बताया है **"योअपक्षीयते स पितरः** (शतपथ ब्राह्मण 2–1–3–1) अर्थात् जो क्षीण हों वे पितर कहलाते हैं।

तर्पण – उसी प्रकार तर्पण को भी देखें, जो पितर के लिए हम करते हैं। तर्पण का अर्थ होता है तृप्ति, संतुष्टि।

येन कर्मणा विदषो देवान् ऋविन्।
पितृश्च तर्पयन्ति सुयन्ति तत् तर्पणम्।।

अर्थात् – जिस कर्म के द्वारा विद्वान देव ऋषि और पितरों को सुख युक्त कर तृप्त करते हैं उसे तर्पण कहते हैं।

लेख लिखने की भावना यही है कि हम केवल मृतक पितरों तक ही सीमित, न उनके श्राद्ध को ही अपना धर्म व न मानें, जीवित पितरों को महत्व देकर उन्हें सुखी बनावें।

जीवित माता–पिता, गुरू, आचार्य, विद्वान के प्रति श्रद्धावान होना सत्य श्रद्धा करना, उनको अपने द्वारा सेवा, अन्न, धन से, वस्त्र से तृप्त करना ही सच्चे अर्थों में श्राद्ध है, तर्पण है, और यही श्राद्ध करना चाहिए। तर्पण करना है तो श्राद्ध पक्ष के दिनों में ही क्यों ? हम नित्य करें, हमारे शास्त्रों में यही उल्लेख है।

इस भावना के रहने से ही जीवित माता–पिता व पितरों का परिवार में आदर, सत्कार होगा। वे ही तर्पण के अधिकारी हैं, उनकी तृप्ति कर तर्पण की विचारधारा समाज में व्याप्त हो जावे तो अनेकों परिवार में एक सुखद वातावरण निर्मित होगा इन विचारों को ग्रहण करके ही हम सच्चे रूप में श्राद्ध व तर्पण कर सकेगें।

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के संबंध में प्रमुख व्यक्तियों, विचारकों की सम्मतियां

राधारमण : पूर्व मुख्य कार्यकारी पार्षद, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली

आर्य समाज की स्थापना एक ऐसे तेजस्वी महापुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने की थी जो ज्ञान–विज्ञान और दैवी तेज से विभूषित थे। उनके आदर्शों पर स्थापित आर्य समाज ने आजादी के संघर्ष तथा समाज को एक नया मोड़ देने और उसे एक नया बल और तेज पैदा करने की दिशा में बड़ा योगदान किया था। आजादी के बाद भी समाज की रूढ़ियों से विमुक्त करने और उसे सशक्त करने की दिशा में आर्य समाज का बहुंत बड़ा योगदान रहा है।

मैं आशा करता हूं आर्य समाज स्वतन्त्र भारत में नव शक्ति और एक नये समाज के निर्माण की दिशा में अपना भरपूर योगदान कर सकेगा।

हीरासिंग : पूर्व कार्यकारी पार्षद (विकास), दिल्ली प्रशासन, दिल्ली

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने देश में व्यास अन्धविश्वासों एवं कुरीतियों के विरूद्ध कठोर संघर्ष करते हुए जिन परिष्कृत सिद्धान्तों, उच्च आदर्शों एवं उत्कृष्ट जीवन मूल्यों का प्रतिपादन किया, आज भी समाज को उनकी उतनी ही आवश्यकता है, जितनी उस समय थी। निःसन्देह आर्य समाज के विचारकों, प्रचारकों एवं विद्वानों ने उन सिद्धान्तों को लोकग्राह्य, लोक–व्यापक एवं लोक प्रिय बनाने के लिए कठोर प्रयास किए हैं, लेकिन फिर भी कुछ ऐसी कुरीतियों एवं अन्धविश्वासों से समाज ग्रस्त है जिनके उन्मूलन के लिए और अधिक प्रयास किए जाने अपेक्षित है। अतीत की उपलब्धियां इस बात की साक्षी हैं कि आर्य समाज भविष्य में भी निरन्तर संघर्षशील रहेगा और अन्ततोगत्वा सफलता प्राप्त करेगा।

हरिदेव जोशी : पूर्व मुख्यमन्त्री, राजस्थान (जयपुर आर्य समाज)

आर्य समाज ने भारत के सम्पूर्ण सामाजिक जीवन में एक नई क्रान्ति को ज़न्म दिया तथा सैकड़ों हजारों ऐसे कार्यकर्ता पैदा किये जिन्होंने देश की आजादी के संघर्ष में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

बंशीलाल : पूर्व रक्षामन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली

आर्य समाज के पिछले सौ सालों का इतिहास सामाजिक जागृति के अभियान का इतिहास है। देश में फैली सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध आवाज बुलन्द करने, ऊँच नींच का भेद भाव मिटाने और हरिजनोद्धार के लिए आर्य समाज ने जो प्रयत्न किए वे सुनहरी अक्षरों में लिखने योग्य हैं। विदेशी जुए को उतार

फेंकने के लिए स्वतन्त्रता, आन्दोलन में भी आर्य समाज ने सराहनीय भूमिका निभाई है।

महान समाज सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत थे। उनका सादा एवं साधनामय जीवन और उनके ऊँचे आदर्श देशवासियों के लिए प्रेरणा के स्त्रोत हैं। आर्य समाज शताब्दी समारोह के अवसर पर मैं स्वामी दयानन्द जी के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं और उम्मीद करता हूं कि आर्य समाज एक बार फिर समाज में फैली बुराइयों को जड़ से उखाड़ने और देशवासियों में राष्ट्रीय एकता के संचार के लिए जागृति का शंख फूँकेगा।

स्व. प्रकाशचन्द्र सेठी : पूर्व केन्द्रीय रसायन एवं उर्वरक मन्त्री, भारत सरकार

राष्ट्रीय नवजागरण में महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का योगदान स्वर्णाक्षरों में अंकित है। सामाजिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

रामनिवास मिर्धा : पूर्व आपूर्ति एवं पुनर्वास मन्त्री, नई दिल्ली

आर्य समाज का हमारे देश के समाज की कायापलट करने में एक गौरवान्वित स्थान रहा है। स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से आर्य समाज ने हमारी पुरानी संस्कृति को जागृत किया एवं उसको वर्तमान जीवन पद्धति का अंग बनाने का प्रयास किया।

स्व. इन्द्रकुमार गुजराल : पूर्व प्रधानमन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली

आर्य समाज अपने गौरवपूर्ण अस्तित्व के 100 वर्ष पूरे कर चुका है। यह उसके तथा देश के लिए गौरव की बात है। समाज में व्याप्त छुआछूत, जाति भेद जैसी बुराइयाँ तथा धर्म के नाम पर होने वाले अनाचार को दूर करके वेद प्रणीत धर्म की पुनः स्थापना के उद्देश्य से महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज ने शिक्षा, अस्पृश्यता उन्मूलन, नारी जागरण और हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में जो कार्य किया है, उसकी महत्ता सर्वविदित है। आज उन्हीं उद्देश्यों को फिर से कार्यान्वित करने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

एम. चन्ना रेड्डी : पूर्व राज्यपाल, राजभवन, लखनऊ

मूल वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा तथा हमारी जाति में समय के साथ–साथ प्रविष्ट तमाम कुरीतियों, अन्धविश्वासों एवं जड़ता के विपरीत आर्य समाज ने प्रशंसनीय योगदान किया है तथा आशा है कि वह स्वयं किन्हीं परिस्थितियों में न बन्धकर, उस मूल अक्षय कोष से, राष्ट्र तथा जाति के जीवन को सिंचित करता रहेगा जो कालान्तर में अनेक नामों और रूपों में अपने को प्रस्फुटित करता रहता है।

क्रमशः............

पर्यावरण की समस्या का हल गाय :–

देश में औद्योगिक विकास काफी हो रहा है। जिससे देश में पर्यावरण की समस्या खड़ीं हुई है। पर्यावरण की शुद्धि एवं कृषि विकास तथा पशुपालन पर विशेष ध्यान देना होगा। इसी कारण से गौधन सुरक्षा अति आवश्यक है। गाय भारत की समृद्धि का कारण है, गाय से सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था जुड़ी हुई है। गाय केवल मांस की गठरी नहीं है। परन्तु गाय से दूध, दूध से बुद्धि शक्ति, शरीर की पुष्टि, तेज, सुन्दरता, मानवता के लिए सद्विचार और आत्मबल मिलता है। गाय के मूत्र से कीटनाशक औषधियॉ और अनेक प्रकार के रोगों के लिए आयुर्वेदिक दवाईयॉ बनाई जाती हैं और किसानों की फसल के लिए कीटनाशक औषधियों से गाय का मूत्र अधिक लाभदायक है।

गाय के गोबर से खाद बनाये जाते हैं, जो रासायनिक खाद से अधिक लाभदायक है। गाय के गोबर में इतनी शक्ति है जो परमाणु बम के असर को कम कर सकती है।

गाय के घी से यज्ञ करने से पर्यावरण की अशुद्ध हवा और प्रदूषण दूर होते हैं। गाय का घी खाने से शक्ति, वीर्य, बुद्धि का विकास होता है। गाय से बैल प्राप्त होते हैं जो परिवहन के कार्य में आते हैं और गाय के मूत्र से अनेक प्रकार की वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।

विश्वविख्यात वैज्ञानिक आइन्स्टाइन ने गाय के महत्व के विषय में कहा था कि अमरिका की जमीन की पैदावार 400 वर्षों में समाप्त होने को है। जबकि भारत में गाय और बैल के आधार पर खेती 10,000 वर्षों से ठीक प्रकार से हो रही है। पैदावार यथावत है। गौ पालन के महत्व को भारत ने करोड़ों वर्षों से स्वीकार किया है परन्तु आधुनिक टेक्नॉलॉजी तथा यांत्रिकीकरण की दुनिया में शिरोमणि जापान जैसे देश को गौवंश का महत्व समझ में आ गया है। जापान में छोटे बड़े ट्रेक्टरों के जगह पर गाय और बैल का उपयोग हो रहा है।

महर्षि दयानन्द उवाच

प्रश्न – जब वेद पढ़ने का सामर्थ्य नहीं रहा तब स्मृति, जब स्मृति के पढ़ने की बुद्धि नहीं रही तब शास्त्र, जब शास्त्र पढ़ने का सामर्थ्य न रहा तब पुराण बनाए, केवल स्त्री और शूद्रों के लिए क्योंकि इनको वेद पढ़ने सुनने का अधिकार नहीं है।

उत्तर – यह बात मिथ्या है क्योंकि सामर्थ्य पढ़ने–पढ़ाने ही से होता है और वेद पढ़ने–सुनने का अधिकार सबको है। देखो ! गार्गी आदि स्त्रियॉ और छान्दोग्य में जनश्रुति शूद्रों ने भी वेद रैक्य मुनि के पास पढ़ा था और यजुर्वेद के 26 वें अध्याय के दूसरे मन्त्र में स्पष्ट लिखा है कि वेदों के पढ़ने और सुनने का अधिकार मनुष्य मात्र को है, पुनः जो ऐसे ऐसे मिथ्या ग्रंथ बता लोगो को सत्य ग्रंथों से विमुख कर जाल में फॅसा अपने प्रयोजन को साधते हैं, वे महापापी क्यों नहीं ?

श्री शेठ हाजी अलारखिया खॉ द्वारा आर्य समाज को 1875 में पहला सात्विक दान

श्री शेठ हाजी अलारखिया रहमतुल्ला सोना वाला के सात्विक दान (5000/–) और आर्य समाज के प्रति उनके हार्दिक भाव निम्नलिखित उन्हीं के शब्दों में देखने योग्य हैं।

यद्यपि अनेक मतमतान्तरों, धर्मों तथा सम्प्रदायों के मन्दिर हैं किन्तु जो विशेषता आर्य समाज में हैं वह किसी में नहीं है कारण कि जहां और मतमतान्तर जाति पाति तथा धर्म का भेदभाव उपस्थित करते हैं वहां आर्य समाज बिना जाति पाति तथा धर्म का भेद भाव ऱक्खे सबके साथ प्रीतिपूर्वक बर्ताव करता है। तथा किसी भी मत सम्प्रदाय का व्यक्ति आर्य समाज में स्वतन्त्रतापूर्वक अपने विचार प्रकट कर सकता है। वहां किसी की किसी प्रकार की रूकावट नहीं है। अतः ऐसे पवित्र स्थान में जहां मनुष्य स्वतन्त्रतापूर्वक सत्यासत्य का निर्णय कर अपना आत्मिक तथा भौतिक कल्याण कर सकता है। इसी प्रभाव से प्रभावित होकर मैं यह तुच्छ भेंट इस पवित्र तथा लोकोपकारी कार्य में अर्पण करता हूँ।

यह कहकर आपने समाज के प्रधान जी के हाथ में पॉच हजार रूपये का चैक सौंप दिया।

सत्यार्थ प्रकाश ने मेरी राह बदल दी – कैलाश खेर

बॉलीवुड के जाने माने गायक कैलाश खेर जो कि सूफियाना मिजाज के गीतों से जाने जाते हैं ने अपने जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि मेरे जीवन में पुस्तकों का बहुत अहम योगदान रहा है।

लेकिन सत्यार्थ प्रकाश मेरे जीवन की वह पहली पुस्तक है जिसका मुझ पर पूरी जिन्दगी के लिए प्रभाव रहेगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखी गयी इस किताब में मुझे नचिकेता और यमाचार्य की कहानी ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया। सभी जानते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जाने माने समाज सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक थे। इस किताब को मेरे पिताजी पढ़ते थे और उन्हीं के जरिये मैंने इसे पढ़ा।

भूल सुधार – विगत अंक माह अगस्त 2015 में लेख **"आजादी की बुनियाद"** में लेखक का नाम गलती से आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री छप गया है कृपया उसे **सीताराम आर्य**, विदिशा पढ़े। – सम्पादक

आर्य समाज की स्थापना

धार जिले के प्रभारी लाखन सिंह आर्य के प्रयास से ग्राम गाजनोद में सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य के द्वारा आर्य समाज की स्थापना की गई। वेद व आर्य समाज के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभामन्त्री जी ने सनातन धर्म की रक्षार्थ आर्य समाज की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। ग्रामवासियों ने यज्ञ करने व सनातन धर्म के प्रचार में स्थापित आर्य समाज को सहयोग देने की घोषणा की।

कार्यक्रम का प्रारंभ सभा के उपदेशक श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री द्वारा यज्ञ करवाकर यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यकर्ताओं की सकियता से अन्य ग्रामा में भी नई आर्य समाज की स्थापना होने जा रही है।

इस अवसर पर संचालन श्री लाखनसिंह आर्य ने किया, श्रीं ओमप्रकाश आर्य उपप्रधान आर्य समाज महू तथा बड़ी संख्या में ग्राम गाजनोद के स्त्री पुरूष उपस्थित थे।

दक्षदेव गौड़
संभागीय उपमन्त्री – इन्दौर संभाग

सभाप्रधान श्री इन्द्रप्रकाश गांधी का इन्दौर आगमन

सभा प्रधान श्री इन्द्रप्रकाश गांधी का इन्दौर आगमन हुआ। आपने आर्य समाज मल्हारगंज, आर्य समाज दयानन्दगंज, आर्य समाज संयोगितागंज गए वहां की समस्त जानकारी, कुछ सुझाव दिए, कार्यकर्ताओं के कार्य की प्रशंसा की। आपके साथ संभागीय उपप्रधान श्री गोविन्द आर्य एवं संभागीय उपमन्त्री श्री दक्षदेव गौड़ भी थे।

थिंक टेंक अर्थात वैचारिक समुह की स्थापना

वर्षों से इस प्रकार का चिन्तन चल रहा था कि आर्य समाज के संगठन को समय समय पर मार्गदर्शन देने वाला, उससे सचेत करने वाला और देश और समाज की सामयिक परिस्थितियां से अवगत कराने वाला एक समुह होना चाहिए, जो अच्छे चिन्तक, विचारवान और रचनात्मक दृष्टिकोण से संगठन को सुझाव देता रहे। इस हेतु दिनांक 17/9/2015 की अन्तरंग सभा में इस निर्णय पर सर्वानुमति से विचार करके इसे स्वीकार किया गया।

इस समुह में श्री डॉ. अखिलेश शर्मा, इन्दौर, श्री डॉ. मणिन्द्र व्यास, उज्जैन, श्री समीर गांधी, शिवपुरी, श्री ऋषि तिवारी एड. इन्दौर, श्री ललित नागर, उज्जैन, श्री अरूण गुप्ता इन्दौर के नाम प्रारंभिक रूप से मनोनीत किये गये हैं। शेष नामों पर और विचार करके इसे आगामी अन्तरंग में पूर्ण स्वरूप प्रदान किया जाएगा।

वेद प्रचार सम्पन्न

आर्य समाज चित्रगुप्तगंज, लश्कर एवं मुरार के संयुक्त तत्वावधान में श्रावणमास के अन्तर्गत वैदिक सत्संग (वेद प्रचार) का आयोजन, पृथक–पृथक स्थानों पर दिनांक 14 से 19 अगस्त 2015 तक आयोजित किया गया।

इसी प्रकार उज्जैन जिले में नगर के अलग–अलग स्थानों पर यज्ञ, भजन, प्रवचन के माध्यम से दिनांक 29/8/2015 से दिनांक 6/9/2015 तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया।

जिला प्रभारियों की नियुक्ति

लाखनसिंह आर्य

आर्य समाज के कार्य को गति देने के लिए विगत अन्तरंग में निर्णय लिया था कि कार्य को व्यवस्थित और अधिक तत्परता से करने के लिए जिले व तहसील स्तर पर प्रभारी नियुक्त करना चाहिए। इस भावना से उज्जैन संभाग के उपप्रधान श्री लक्ष्मीनारायण जी एवं उपमन्त्री श्री दरबार सिंह की अनुशंसा पर शाजापुर जिले में श्री मांगीलाल जी आर्य, करजू, आगर जिला श्री प्रहलादसिंह आर्य, रलायति, बड़ोद जिला श्री किशनसिंह गंगापुर एवं श्री रोड़सिंह, फड़का।

इन्दौर संभाग के उपप्रधान श्री गोविन्द जी आर्य एवं उपमन्त्री श्री दक्षदेव गौड़ की अनुशंसा पर इन्दौर जिला श्री डॉ. अखिलेश जी शर्मा, खरगौन, बड़वानी जिला श्री डालुराम जी आर्य एवं धार जिला में श्री लाखनसिंह आर्य को प्रभारी नियुक्त किया गया।

जिला प्रभारी अब अपने जिले की प्रत्येक तहसील में प्रभारी नियुक्त करेगें। प्रदेश के शेष स्थानों से भी शीघ्र ही नाम प्राप्त हो जाएंगे।

वेद कथा एवं वैदिक भजन

श्री श्यामलाल मुकाती बड़नगर एवं लक्ष्मीनारायण जी, मोलाना उज्जैन वालों की प्रेरणा से पाटीदार समाज धर्मशाला रंगवासा में तीन दिवसीय गायत्री महायज्ञ एवं वेद कथा के साथ वैदिक भजनों का आयोजन किया गया, जिसमें प्रभावी वैदिक भजनों की प्रस्तुती भजनोपदेशक पं. कमलकिशोर शास्त्री द्वारा दी गई एवं सुश्री अंजली जी, हरियाण द्वारा की गई। आपने पाखण्ड, अंधविश्वास जैसे विषयों पर अपनी मधुर वाणी से प्रवचनों की प्रस्तुति दी गई। साथ ही अन्तिम दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल के मन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य द्वारा वेद व श्री राम एवं कृष्ण के जीवन पर अपने ओजस्वी व्याख्यान वैदिक प्रभाव विषय पर बड़ी गंभीरता से प्रकाश डाला गया। उक्त प्रवचन की सर्वत्र प्रशंसा की गई। उक्त कार्यक्रम वेद प्रचार समिति महू, राउ एवं आर्य समाज रंगवासा के तत्वावधान में संयुक्त रूप से किया गया। उक्त जानकारी आर्य समाज रंगवासा के मन्त्री आर्य राजेन्द्र कुमार पाटीदार द्वारा दी गई उक्त कार्यक्रम 31 जुलाई से 2 अगस्त तक किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिला–पुरूषों की उपस्थिति हुई।

चौधरी श्री बद्रीसिंह यादव पूर्व प्रधान आर्य समाज गोरमी भिण्ड (म.प्र.) आर्य समाज गोरमी के वर्षो प्रधान रहे। चैत्र शुक्ल पक्ष राम नवमी संवत 2072 को सौ वीं वर्षगॉठ मनाई गई। 100 वर्ष पूर्ण होने पर यज्ञ का वृहद आयोजन किया गया।

जन्म : चैत्र शुक्ल पक्ष राम नवमी संवत 1972

मृत्यु : श्रावण शुक्ल पक्ष नवमी संवत 2072 दिनांक 23–8–2015

प्रान्तीय सभा द्वारा चौधरी श्री बद्रीसिंह यादव को श्रद्धांजलि दी गई।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य,पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - प्रकाश आर्य, महू

AMIT # 98262-71062